प्रातः क्लास 31-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करनेसे तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। और फिर ऐसे विश्व का मालिक बन जावेंगे। कल्प2 तुम ऐसे ही तमोप्रधान सतोप्रधान विश्व के मालिक बनते हो। फिर 84 जन्मों बाद तमोप्रधान बनते हो। फिर बाप शिक्षा देते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। भक्ति-मार्ग में भी तुम याद करते थे परन्तु उस समय छोटी बुधि का ज्ञान था। अभी महीन बुधि का ज्ञान है। प्रैक्टीकल में बाप को याद करना है। यह भी समझाना है आत्मा सभी स्टार मिशल है। बाप भी स्टार मिशल है। सिर्फ वह पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। तुम लेते हो इसलिए तुमको तामसप्रधान बनना पड़ता है। फिर सतोप्रधान ब्र× बनने लिए मेहनत करना है। माया घड़ी2 भूला देती है। अभी अभूल बनना है। भूलें नहीं करनी है। इस भूल के कारण ही तमोप्रधान बने हो। और भी भूलें करते रहेंगे तो और ही तमोप्रधान बन जावेंगे। डायरेक्शन मिलती है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बैटरी को चार्ज करो तो तुम सतोप्रधान विश्व का मालिक बन जावेंगे। टीपर तो सभी को चढ़ाते हैं। स्टुडन्ट में नम्बरवार ही पास होते हैं। नम्बरवार फिर कमाई है। तुम भी नम्बरवार पास होते हो, नम्बरवार मर्तबा पाते हो। कहां विश्व का मालिक कहो प्रजा में दास दासियां। स्टुडन्ट को जो अच्छे सपुत, आज्ञाकारी बफादार, फरमान बरदार होते हैं वह जरूर टीचर के मत पर चलेंगे। जितना रजिस्टर अच्छा होगा उतना ही मार्कस ज्यादा मिलेंगी। इसलिए बाप भी बच्चों को बार 2 समझाते हैं गफलत मत करो। ऐसे मत समझो कल्प पहले भी फेल हुये थे। बहुतों को यह भी दिल में आता होगा हम सर्विस नहीं करते हैं तो जरूर हम फेल होंगे। बाप तो रोज साधानी देते रहते हैं। बच्चे सतयुगी सतोप्रधान से कलियुगी तमोप्रधान बने हो। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाबराफे रिपीट होगी। सतोप्रधान बनने लिए बाप सहज रास्ता बताते हैं। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम चढ़ते सतोप्रधान बन जावेंगे। चढ़ेंगे धीरे2। इसलिए भूलो मत। परन्तु मायाभूला देती है। नाफरमानबरदार नम्बरवन बना देती है। बाप जो डैरेक्शन देते हैं वह मानते हैं प्रतिज्ञा करते हैं फिर भी उस पर चलते नहीं। तो बाप कहेंगे आज्ञा का उलघंन कर, अपने वचन से फिरने वाले हैं। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर उस पर अमल किया जाता है। बेहद का बाप जैसे बैठ शिक्षा देते हैं। ऐसी शिक्षा और कोई देंगे नहीं। चैंज भी जरूर होना है। चित्र भी कितना अच्छा है। ब्रह्मा वंशी सो विष्णुवंशी कैसे बनेंगे। यह है नई ईश्वरीय माया। इनको भी समझानी पड़ता है। यह प्रे स्पीच्युअल नालेज× वा रूहानी शिक्षा कोई देते नहीं। कोई2 संस्थाएं भी निकली है जो रूहानी सुस्था नाम रखा है। परन्तु वास्तव में रूहानी संस्था तो तुम्हारे बिगरकोई हो न सके। इमीटेशन तो बहुत हो जाते हैं। यह है बिलकुल नई बात। तुम बच्चे बहुत थोड़े हो। और कोई यह बातें समझ न सके। सारा झाड़ अभी खड़ा है। बाकी थुर जो शुरू में था वह नहीं हैं। थुर खड़ा हो जावेगा बाकी टहनियां रहेंगी नहीं। वह सभी खत्म हो जावेंगे। यह भी समझने की बात है। बेहद का बाप ही बेहद की समझानी देते हैं। अभी सारी दुनिया पर रावण का राज्य है। यह लंका है ना। वह लंका हिन्दुस्तान से बाहर दिखाते हैं। समुद्र के ऊपर है जहां स्टीमर में जाना होता है। बेहद की दुनिया भी समुद्र पर है। चारो तरफ पानी ही पानी है। वह है हद की बातें। बाप तो बेहद की बातें समझाते हैं। एक ही बाप समझाने वाला है। यह तो पूरा ही जन्म-मरण में आता है। यह भी तुम समझते हो पहले2 ब्राह्मण हैं वही पहले2 फिर देवता बनेंगे। और पहले2 फिर शिव बाबा की पूजा भी शुरू करेंगे। यह सभी बातें धारण करने की है। यह पढ़ाई है ना। जबतक ब्र× नौकरी मिले, पढ़ाई का रिजल्ट निकले तब तक पढ़ाई में लगे रहते हैं। उसमें ही बुधि चलती है। यह भी रूहानी पढ़ाई है। स्टुडन्ट का कर्म है पढ़ाई में ध्यान देना। उठते-बैठते चलते याद करना है। स्टुडन्ट के भी बुधि में उठते-बैठते चलते-फिरते पढ़ाई रहती है ना। इम्तहान के दिनों में बहुत मेहनत करते हैं कि कहां नापास न हो जावें। खास सवेरे बगीचे में जाकर पढ़ने बैठते हैं। क्योंकि घर के शहर के वायबरेशन फिर भी गन्दी होती है। बाप ने समझाया है देहीअभिमानी होने का अभ्यास डालो। फिर टेव पड़ जावेगी। भूलेंगे नहीं। एकान्त की अवस्था

स्थान तो बहुत हैं। यह बाबा तो कहां जा नहीं सकते। तुम जा सकते हो। शुरु में क्लास पूरा कर तुम सभी पहाड़ों पर चले जाते थे एकान्त में। अभी दिन प्रति दिन नालेज गुह्य डीप होती जाती है।

बाबा ने समझाया है था त्रिमूर्ति भी वास्तव में सिर्फ सा० करने की चीज़ है। सा० करते हो यह कर्मातीत अवस्था में हैं। कर्मातीत अवस्था के बाद ही तुमको बाप के घर जाना है। कर्मातीत अवस्था हो गई फिर तो याद भी पूरी हो जावेगी। याद करने की दरकार ही न रहेगी। त्रिमूर्ति दिखलाते हैं, इन तीनों का शिव के साथ कनेक्शन रखते हैं, विष्णु और शंकर का भी कनेक्शन रखते हैं। अभी विष्णु का कनेक्शन क्यों? क्या विष्णु को भी कर्मातीत बनने लिए शिव को याद करना है। वह तो कर्मातीत अवस्था को पाकर विष्णु बना है। यह है ही कर्मातीत अवस्था की सम्पूर्णता। कर्मातीत अवस्था में गये, सूक्ष्मवतन में फरिश्ते बन गये। यूं हर्षित भी होते यहां हैं। मिरवा मौत·····है तो फिर भी मनुष्य ही। यूं तो सूक्ष्मवतन क्या है, भल इनका गायन है मूल वतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन। इनके ऊपर समझानी देते हैं फिर भी बाप कहते हैं यह सभी सा० करने की चीज़ हैं। हमारा कनेक्शन है बाप के साथ। कर्मातीत अवस्था को पाया फिनीश। सीधा चले जावेंगे। हरु बरु वतन में ठहरने की दरकार नहीं हैं। ऐसे नहीं कि लम्बी जर्नी है इसलिए बीच में रेस्ट लेते हैं। नहीं। आत्मायें सीधा चली जाती है। यह है तो समझानी देते2 फिर सभी चीज़ को उड़ा देते हैं। नंगे आये फिर सीधे नंगे जाना है। पुरुषार्थ भी यह है। आत्मा पवित्र बन जायेफिर यह उड़ेंगी। आत्मायें सूक्ष्मवतन में ठहर क्या करेंगी। दरकार क्या पड़ी है छाया का शरीर लेने। यह ड्रामा में नूंध है जो बाप समझाते रहते हैं। समझाते2 दुनिया ही उड़ाये देते हैं। बाप कहते यह दुनिया न जीती देखो। कुछ भी न देखो। पिछाड़ी में तो यह सभी भूल ही जाना है। बुधि लग जाती है अपने शान्तिधाम और सुखधाम की तरफ। सबजेक्ट बुधि में रहती है। तब अपने राजाई में आ जाते हैं। तो इन चित्रों पर समझाना भी है। फिर बाप कहते हैं आखिरीन में यह कुछ है नहीं। समझाने लिए रखे हैं। कोई पूछे विष्णु क्या है, यह एरो किसलिए दिखाया है। क्या विष्णु को भी शिव को याद करना है। वहां तो कोई शिव को याद करता ही नहीं। दुःख में ही सिमरण करते हैं। फिर उनको क्यों दिखाया है। समझाते तो हैं अभी उड़ा कैसे सकते। गायन भी है। त्रिमूर्ति रोड, त्रिमूर्ति हाउस भी है। उन्हों की फिर टैव पड़ गई है। त्रिमूर्ति लीन शेर देते हैं। यह है ही शेर बकरी घोड़े ·· तोर कोर्ट आफ आर्मस के भेंट में यह देना पड़ता है। बाकी तुम जानते हो वह दुनिया तो कोई है नहीं। अपनी नई दुनिया को ही हम याद करते हैं। सूक्ष्मवतन से क्या काम। बाप को याद करते2 बाप के पास जाना है। फिर आना है बैकुण्ठ। आते2 यह सभी उड़ जावेंगे। समझाना पड़ता है रांग क्या है राईट क्या है। बाप ही आकर समझाते हैं कि तुमको और जो सभी सुनाते हैं वह रांग है। मैं जो समझाता हूं वह है राईट। वास्तव में वह कोई सतसंग नहीं हैं। सत का संग तो एक ही है। सत एक है। बाकी सभी हैं असत्य। सतयुग में तो सतसंग होता ही नहीं। जब झूठी दुनिया बनती है तब ही सतसंग होते हैं। सत के विपरीत असत्य संग ही कहा जाता है। परन्तु किसको कहो तो समझेंगे नहीं। जब तक सीढ़ी पर न समझाया जाये। गायन भी है सत का संग तोरे···· बाप कहते हैं हमने तुमको पार किया फिर नीचे किसने गिराया? रावण। राम को कहा जाता है सत। रावण को कहा जाता है असत्य। द्वापर से लेकर असत्य का संग शुरु होता है। अनेक संग करते रहो, शास्त्र गीता आदि पढ़ते रहो स्नान करते रहो, कर्म-काण्ड करते रहो बाप जो सिखलाते हैं वह कोई भी शास्त्र में नहीं हैं। गीता भी रांग। मनुष्यों ने जो कुछ बनाया है वह रांग असत्य। यह डिटेल बाप बैठ समझाते हैं। मूल बात तो बाप कहते हैं मामेकं याद करो। यह भी तुम्हारे ही कल्याण के लिए कहता हूं। क्योंकि तुम तो प्रधान बन गये हो। चक्कर लगाया है ना। यह भी तुम बच्चों की बुधि में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही है। याद उनको रहेगा जो सर्विस करते रहेंगे। सभी को सुनाते हैं। बाप तो समझाते हैं परन्तु जब किसकी बुधि में भी बैठे ना। बुधि है नहीं। काठ की पेटी है। कोई की लोहे की, कोई की सोने की भी है।

गोल्डेन एजेड पीती होंगे तो धारणा भी होगी। धारणा करने से ही तुम गोल्डेन एज में चले जाओ हो।

दूसरी बात बाबा समझाते यूनिवर्सिटी आदि खोलते हैं, लिटरेचर छपाते हैं तो उसमें स्प्रीच्युअल यूनिवर्सिटी लिखना भूल जाते हैं। स्प्रीच्युअल अक्षर लिखते नहीं हैं। अभी फिर यूनिवर्सिटी अक्षर तो फिर वर्ल्ड अक्षर क्यों होना चाहिए। दो अक्षर ठीक नहीं हैं। वर्ल्ड अक्षर निकाल देना चाहिए। यूनिवर्सिटी अक्षर है तो फिर वर्ल्ड अक्षर की दरकार नहीं। स्प्रीच्युअल यूनिवर्सिटी लिखना चाहिए। ऐसे2 मिस्टेक्स भी निकलते रहते हैं। मेहनत होती है ना। अच्छा जो ग्र छपाया उस से भी मनुष्य पूरा समझ नहीं सकते हैं। अच्छा फिर कैसट करो। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी दोनों अक्षर लिखने से समझेंगे यह तो लिखने वाले कोई जट है। बाकी हां वर्ल्ड गाड-फादर लिखना ठीक है। सवेरे बाप को याद भी करते हैं फिर ज्ञान की बातें भी आ जाती है। कंसेशन करनी होती है। नहीं तो कहेंगे बिचारी ब्रह्माकुमारियां पढ़ी-लिखी नहीं हैं। तो खुशामत चलती है। ज्ञान बड़ा ही मज़े का है। आदम पड़ जाती है सवेरे उठ कर याद करने की और नालेज पाने की। टीचर जो बहुत अच्छा पढ़ाते हैं उनकी याद भी आती है ना। फिर उनको परजेन्ट भी देते हैं। तुमको भी पढ़ाने वाला बहुत ऊंच ते ऊंच है। वह सुप्रीम टीचर सभी से ऊंचा है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिशन आकर पढ़ाते हैं। एक आब्जेक्ट भी है। टीचर पढ़ाते हैं तो स्टूडन्ट को एक आब्जेक्ट की याद रहती है ना। यह है वानप्रस्ती में जाने की पढ़ाई। सिवाय एक के और कोई समझा नहीं सकते। साधु-सन्त आदि तो भक्ति ही सिखलायेंगे। वाणी से परे जाने का रस्ता चाहिए ना। वह बाप ही सिखलाते हैं। और कोई बता न सके। एक बाप ही सभी को वापस ले जाते हैं। अभी जो तुमको समझाया जाता है वह फिर रिपीट होता है भक्ति मार्ग में। अभी तुम्हारी है वैहद की वानप्रस्त की अवस्था। जिसको कोई भी नहीं जानते। बाप कहते है बच्चे तुम सभी वानप्रस्ती हो। सारी दुनिया की वानप्रस्ती अवस्था है। कोई पढ़े वा न पढ़े। सभी को वापस जाना जरूर है। तुम समझते हो जो भी आत्मायें भूलवतन में आवेंगी वह अपने2 स्थान में चली जावेंगी। आत्माओं का शरीर भी कैसा सुन्दर फूल बना हुआ है। सारी दुनिया का चक्र बिलकुल स्थ्युरेट है। जरा भी फर्क नहीं। लोवर और सलेन्डर घड़ी होती है ना। लीवर घड़ी बिलकुल स्थ्युरेट रहती है। इनमें भी किसका बुधि योग लीवर रहता है किसको सलेन्डर। कोई का तो बिलकुल लगता ही नहीं। घड़ी ठेठे जैसे की चलती ही रहते=है= नहीं। तुमको तो बिकुल= बिलकुल स्थ्युरेट लीवर घड़ी बनना है। लीवर राजाई में जावेंगे। सलेन्डर हो गे तो प्रजा में चले जावेंगे। पुरुषार्थ लीवर बनने का करने का है। राजाई पद पाने वालों के लिए ही कहा जाता है कोटों में कोई। वही विजय माला में पिरोये जाते हैं। समझते हैं मेहनत तो बराबर है। तब ही कहते हैं बाबा घड़ी भूल जाते हैं। बाप समझाते हैं जितना पहलवान बनेंगे माया लाख जरूर उतारेगी। मल्लयुध होती है। बड़ी सम्भाल रखनी होती है। पहलवानों को पहलवान ही जानते हैं। यहां भी ऐसे ही हैं। महावीर बच्चियां भी हैं, बच्चे भी हैं। उन में फिर भी नम्बरवार है। अच्छे महारथियों को फिर माया भी अच्छी तरह तूफान में लाती होगी। अनेक प्रकार के स्वप्न आदतूफान आते हैं। जिसको कोई कनेक्शन नहीं, वह भी बुधि में आ जावेगा। बाबा समझाते हैं भल माया कितना भी हैरान करे तूफान लावे तुम=धुरा खबर दार रहना। कोई भी बात में हारना नहीं। मनसा में तूफान भल आवे कर्मईन्द्रियों से न करना है। तूफान आते ही हैं गिराने लिए। पहले2 तूफान तो इनको ही आवेंगे। सब से आगे है ना। जरूर इनको अनुभव होगा तब तो औरों को समझा सकेंगे। लिखते हैं बाबा यह होता है। हां बच्चे यह भिन्न2 प्रकार के तूफान आवेंगे। माया की खूब लड़ाई चलती है। लड़ाई न हो तो पहलवान कैसे बनेंगे। जब कोई कुश्ती कुछ लड़ी जाती है, बड़ी 2 की होती है तो बहुत मनुष्य देखने आते हैं। माया को तूफान की प्रवाह नहीं करनी चाहिए। परन्तु चलते2 कर्म इन्द्रियों के वश हो झट गिर पड़ते हैं। फिर पाईन्ट तुम्हारे खाते बढ़ जाती है। बाप तो रोज समझाते हैं। कर्म इन्द्रियों से कोई विकर्म न करना। मुख से कुछ भी न करना। यहां तो बहुत बेकायदे चलन चलते हैं। समझाया जाता है बेकायदे कर्तव्य करना छोड़ो नहीं तो पाई-पैसे

का पद पा लेंगे। अन्दर में समझते हैं हम नापास ही होंगे। जाना तो सभी को है ना। बाप कहते हैं मेरे को याद करते हैं वह याद भी विनाश को नहीं पाते। याद ज्ञान से करते हैं। थोड़ा भी याद करने से स्वर्ग मे आ जावेंगे। थोड़ा याद करने अथवा बहुत याद याद करने से क्या2 पद मिलेगा वह भी तुम समझ सकते हो। कोई भी छीप नहीं सकते। जान सकते हैं, कौन क्या2 बनेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं तुम पूछ सकते हो बाबा से कि हम इस समय अगर डिटिफेल हो जावें तो किस पद को पावेंगे। खुद भी समझ सकते हैं। पूछ भी सकते हैं। आगे चल आपे ही पूछेंगे। समझेंगे विनाश तो सामने खड़ा है। तूफान बरसात, नेचर कैलेमिटीज़ आद कोई पूछ कर थोड़े ही आते हैं। रावण तो बैठा ही है। रावण को दुश्मन समझ मारते हैं। मारते ही आते हैं। इस से भी समझते नहीं हम दुश्मन के वस हो तमोप्रधान बनते गये हैं। तुम बच्चों के सिवाय और कोई तो समझ भी न सके। झोला में खज़ाना भी भर सके ना। छेद से सारा बह जाता है। धारणा हो इसके लिए गोल्डेन एजेड बुधि चाहिए। बच्चों की धारणा बहुत कम है। इसलिए बाबा रोड़ियां मारते हैं म्युज़ियम आद खोलते हैं सर्विस एवुल करनी चाहिए। वह मिलती नहीं। मांगनी करते रहते हैं अच्छी टीचर चाहिए। मैं फिर लिखता हूं तुम बुक बसर ही, 3मास, 6मास, 12मास टीचर मिला, अभी तक तुम सीखे नहीं हो। कुछ तो रिजल्ट निकलनी चाहिए। कुछ तो पास ही निकलनी चाहिए। सबको 20 आते हैं उन से 3-4तो पास होनी चाहिए। 12मास में। कोई पास दो कोई पास4-6 निकलते रहे तो बहुत टीचरस बन जावें। तो मीठे2 बच्चों जिनको पढ़ा रहा हूं उन्हों की बुधि में आता है। है तो वेहद के सभी बच्चे परन्तु पढ़ने वाले थोड़े हैं। आई०सी० एस० बड़ा इम्तहान है तो उन में भी थोड़े पास होते हैं। यह भी बड़ा इम्तहान है। इसमें जो पास होते हैं तो पद भी ऊंच पाते हैं। राजाएं तो जैसे ऐसे समझदार चाहिए ना तो रईयत की भी ठीक रीति सम्भाल सकें। बच्चे जानते हैं बाप आकर पढ़ा कर हमको स्वर्ग का मालिक सतोप्रधान बनाते हैं। तुम जानते हो हम सतोप्रधान थे। सो तमोप्रधान बने हैं। फिर बाप को याद करने से हमको सतोप्रधान बनना है। पतित-पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं मन्मनाभव। यह तो वही गीता का एपीसुड है। डबल सारताज बनने की ही गीता है। बनावेंगे तो बाप ना। तुम्हारी बुधि में सारी नालेज आती जाती है। जो अच्छी बुधि वाले हैं उनके पास अच्छा धारणा होती है। कम बुधि वाले किसको समझा नहीं सकते हैं। तो बच्चों को पुरुषार्थ अच्छी रीत करना चाहिए। गरीब भी ऊंच पद ले सकते हैं। जैसे यह सिपाही है इनको तो बड़ी खुशी होगी हम सिपाही से क्या बनते हैं। पाई पैसे की सिपाही से हम हम विश्व का मालिक बनते हैं। इतनी खुशी रहनी चाहिए। ऐसे दैवी गुण भी धारण करनी है। देखना है कोई को तंग तो नहीं करते हैं। बाप तो बहुत ही प्यार से समझाते हैं। अपना कल्याण चाहते हो तो दैवी गुण भी धारण करो। किसके अवगुणको देखो ही नहीं।

आगे चल कर तुम्हारा नामाचार जोर से होता जावेगा। कहेंगे यह ज्ञान तो वन्डर फुल है। अभी भी कोई2 कहते हैं ना। हमारी तो आंखें ही खुल गई है। इसलिए बच्चों को सभी पाईन्टस धारण करनी चाहिए। नोट करना चाहिए। बाप कब अन्यन्य बच्चों में भी प्रवेश कर ज्ञान देते हैं। बाकी इसको सर्वव्यापी नहीं कहेंगे। कब बाप की कब इनकी गुरली चलती है। दोनों ही इस तख्त पर बैठे हैं। जैसे गुरु लोग अन्यन्य चेले को बाजू में बैठ जाते हैं ना। यह ब्रह्मा भी उनका अन्यन्य है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा भी कहते फिर देव देव महादेव भी कह देते हैं। ऊंच तो ब्रह्मा है। शंकर को तो बाबा ने उड़ाये दिया। बाप कहते हैं मैं न विनाश करता हूं न कराता हूं। यह तो बाप है। सूक्ष्मवतन में देव भी कोई है नहीं। जिस पर सवारी की है। यह भी रांग है। न शंकर के जटाएं आद हैं। न धतुरा आद खाते हैं। न भां पीते हैं। शंकर-पार्वती की बात ही नहीं। तमोप्रधान मनुष्यों से विचित्र टिण्डम ही पैदा होते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते, नमस्ते।